माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।

[1] राजेन्द्र सिंह [2] डॉ0 आर0 एस0 मिश्र

[1] शोधार्थी, [2] शोध निर्देशक
[1] शिक्षा संकाय [2] शिक्षा संकाय
एकेएस विश्वविद्यालय, सतना, म0प्र0

प्रस्तावना–

परिवार छात्र की प्रथम पाठशाला है। परिवार का वातावरण माता–पिता के आपसी सम्बन्ध व बच्चों से उनके व्यवहारों का बच्चे के व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धियों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इस दिशा में किए गए विभिन्न शोध कार्यों से उपर्युक्त मान्यता एक तथ्य के रुप में स्थापित है कि घर में अभिभावक बच्चे को जिस प्रकार के वातावरण में रखेंगे, बच्चों का व्यक्तित्व उससे प्रभावित होता है। जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर भी अवश्य पड़ता है।

परिवार एक पवित्र एवं उपयोगी संस्था है जिसमें मानव की सर्वांगीण उन्नति का आधार सहयोग, सहायता ओर पारस्परिकता का भाव रहता हैं। यह भाव वह शक्ति है जिसके आधार पर मनुष्य आदि–जंगली स्थिति से उन्नति करता आज की सभ्य स्थिति में पहुँचा है। सहयोग की भावना ही मनुष्य जाति की उन्नति का मूल कारण रही है। एकता, सामाजिकता, मैत्री आदि की सहयोगमूलक शक्ति ने आज मानव सभ्यता को उच्च स्तर पर पहुँचा दिया है। अभिभावकों के व्यक्तिगत आचरण के साथ परिवार का वातावरण भी बच्चों और सदस्यों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करता हैं। जिन घरों में दिन–रात लड़ाई–झगड़ा तथा आपा–धापी होती रहती है, उस परिवार के बच्चों और अन्य सदस्य परस्पर सहयोग का मूल्य नहीं समझ सकते। उनमें स्वार्थ और कलह की प्रमुखता हो जायेगी। परिवार के माध्यम से मनुष्य आत्म–कल्याण की ओर भी अग्रसर हो। उसमें सामाजिकता, नागरिकता और सबसे बड़ी बात विश्व मानवता का कल्याणकारी भाव जागे। वह अपने जैसे अन्य मनुष्यों के लिए त्याग, सहानुभूति सौहार्द एवं आत्मीयता का अभ्यस्त हो सके। मनुष्य की संकीर्णता दूर होकर उसकी आत्मा का व्यापक विकास हो, यही आत्म–कल्याण का राजमार्ग है, मनुष्य दूसरे का दुःख– दर्द समझकर उसके साथ सहानुभूति रख सके, उसकी सेवा–सुश्रूषा तथा सहायता करने को तत्पर रहे, यही आत्म–उन्नति के लक्षण हैं। मनुष्य का सर्वांगीण विकास पारिवारिक जीवन से ही सम्भव है। परिवार व्यक्ति का एक ऐसा आश्रय स्थल है जहाँ वह अपनी समस्त मनोभावनाओं एवं इच्छाओं को व्यक्त करने के लिए पूर्णतः स्वतन्त्र होता है। परिवार के बिना सभ्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। परिवार के प्रत्येक सदस्य एक–दूसरे के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते हुए सहयोगपूर्वक रहते हैं। पारिवारिक सदस्य रक्त सम्बन्धी होने के साथ ही भावनात्मक रूप से भी एक–दूसरे से आबद्ध होते हैं। प्रसिद्ध पर्यावरणवादी लुक (1935) "बालक की समझ पर्यावरण के प्रति उसकी प्रतिक्रियाओं का फल है। कोशिकीय जीव से मानव तक प्रत्येक जीवित प्राणी के जीवन की प्रभुत्वशाली विशेषता उसका वातावरण से निरन्तरता हैं माता–पिता अध्यापक एवं सहपाठियों से अन्तर क्रियायें विद्यार्थी जीवन का प्रमुख भाग है।" भारतीय संस्कृति की गतिशीलता ने परिवार के प्रतिमानों में अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। पिता पुत्र सम्बन्ध, स्त्री पुरुषों में तो परिवर्तन हुआ ही है साथ ही स्त्रियों और पुरुषों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति में भी परिवर्तन आए हैं। परिवार का आकार दिन प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है। गाँवों की अपेक्षा शहरों के परिवार अधिक छोटे होते जा रहे हैं। इसके साथ ही पिछले पचास वर्षों की अपेक्षा अब रिश्तेदारों के आपसी सम्बन्ध भी दुर्बल होते जा रहे हैं। बालकों के लिए भी, अभिभावक या अन्य परिवार के सदस्यों के पास समय नहीं रहा है।

शब्दों का परिभाषीकरण– अध्ययन के क्षेत्र व स्वरूप को स्पष्ट रूप से समझने हेतु शीर्षक के प्रयोग बिन्दुओं को निम्न प्रकार परिभाषित किया गया है।

परिवार–

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार ''परिवार एक ऐसा समूह है जिसमें स्त्री और पुरूष यौन सम्बन्ध पर्याप्त निश्चित होता है और जो बच्चों को पैदा करने तथा उनके लालन पालन की व्यवस्था करता हैं।'' डा0 मजूमदार के अनुसार– ''परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो एक साथ रहते हैं और जिनमें

रक्त सम्बन्ध होता है और जो स्थान स्वार्थ पारस्परिक कर्त्तव्य भावना के आधार पर समान होने की चेतना या भावना रखते हैं।''

वातावरण–

डगलस एवं हालैण्ड के अनुसार– वातावरण वह शब्द है जो समस्त बाह्य शक्तियों, प्रभावों व परिस्थितियों का सामूहिक रूप से वर्णन करता है। जो जीवधारी के जीवन स्वभाव, व्यवहार अभिवृद्धि विकास तथा प्रौढ़ता पर प्रकाश डालता है।

पारिवारिक वातावरण–

पारिवारिक वातावरण के अन्तर्गत सारे घर का वातावरण आता है इसके अन्तर्गत माता–पिता के आपसी सम्बन्ध माता–पिता व बच्चों के बीच आपसी सम्बन्ध पूरे परिवार के सदस्यों के बीच तनावपूर्ण अथवा सौहार्दपूर्ण व्यवहार, परिवार का व्यावसायिक वातावरण आदि जैसे फौजी, व्यापार अथवा शिक्षक होना आदि बहुत से कारक आते हैं। छात्रों की उपलब्धि उनके वातावरण से प्रभावित होती है। पारिवारिक शब्द का अर्थ माता–पिता तथा बच्चे के मध्यस्थ आन्तरिक व्यक्तिगत सम्बन्ध से है। इसके अन्तर्गत माता–पिता का बच्चे के प्रति स्वीकृति या प्रति अस्वीकृति पितृवत प्यार, पारिवारिक अनुशासन बच्चे को प्रदत्त स्वतन्त्रता एवं अधिकार, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक स्तर माता–पिता का शैक्षिक दृष्टिकोण बच्चे से उनकी आशायें, परिवार तथा पारिवारिक विस्तार के पक्षपात आदि समाहित हैं इसके बहुत से कारक हो सकते हैं।

1. माता पिता का अशिक्षित होना।
2. माता पिता का अपने बच्चे की पढ़ाई पर किंचित भी रूचि न लेना।
3. आर्थिक अभाव का होना।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक सफलता किसी विशेष अथवा विषयों के समूह के ज्ञान, समझ, अवबोध अथवा दक्षता की माप प्रदर्षित करती है। वर्तमान अध्ययन के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों का उनके द्वारा पूर्व कक्षा की वार्षिक परीक्षा में प्राप्तांकों के योग के आधार पर आँका जाता है अर्थात विभिन्न अंकन प्रक्रिया से युक्त विभिन्न स्कूलों से आने वाले छात्रों की समरूपता स्थिर करने हेतु उनके द्वारा प्राप्तांकों का प्रतिशत ही अध्ययन में समाहित किया गया है। सामान्य शब्दों में विभिन्न शिक्षा संस्थाओं द्वारा निर्देशित पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर उसके तथ्यों को ग्रहण करने की निपुणता का योग्यता के रूप में हम शैक्षिक उपलब्धि मापने के लिए ही किया जाता है और इसी के आधार पर बालकों को अग्रिम कक्षा में प्रवेश देने का निश्चय किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि को दो भागों में बांटा गया है।

उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि, स्थानाभाव के कारण इसे उच्च उपलब्धि व निम्न उपलब्धि भी लिख दिया गया है। माता–पिता तथा संरक्षक– अंत में निष्कर्ष को ध्यान में रखते हुए अन्वेषक ने माता–पिता संरक्षक की शैक्षिक कार्यो की सफलता के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये–

1. माता पिता को बच्चों के शैक्षिक क्रियाकलापों के अनुसार उसमें रूचि लेनी चाहिए।
2. माता पिता को बच्चों को उपहार देकर उनको उत्साहित करना चाहिए और उनके साथ अंदर उच्च शिक्षा के प्रति जागृति उत्पन्न करना चाहिए।
3. माता पिता को बच्चों के लिए उचित वातावरण को उत्पन्न करना चाहिए। जो उनको अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करें।
4. माता पिता के द्वारा बच्चों में अच्छे अध्ययन की आदतों को उत्पन्न करना चाहिए।
5. माता पिता को यदा कदा विद्यालय जाना चाहिए और अपने बच्चों के अध्यापकों से बच्चे कार्य व समस्याओं के विषय में बातचीत करनी चाहिए।
6. माता पिता को सामाजिक दृष्टिकोण व बच्चों के सामूहिक भावना को जागृत करना चाहिए।
7. बचपन से ही बच्चों में शिक्षा के प्रति उचित व मित्रतापूर्ण दृष्टिकोण को विकसित करना चाहिए।

8. माता पिता को अपने प्रयुक्त भाषा पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि बच्चा भाषा प्रयोग माता पिता से ही सीखता है।
9. बाल्यावस्था में माता पिता को बच्चों को आशयकीय सहानुभूति प्रदान करनी चाहिए।
10. बच्चों को दण्ड नहीं देना चाहिए, बल्कि उन्हें गलती को एहसास प्यार से समझाकर करना चाहिए।

आवश्यकता और महत्व– विद्यालय एक ऐसी संस्था है जिसे समाज के द्वारा औपचारिक रूप से अनुबन्धित करते हुये बच्चों को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व दिया गया है विद्यालय एवं कक्षा का पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण बालक के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते आ रहे हैं। कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण वह परिवृत्त है जो छात्र को चारों ओर से घेरे हुए हैं, तथा उनके जीवन व क्रियाओं पर गहरा प्रभाव डालता है। इस परिस्थिति में छात्र से संबंधित बाहर के समस्त तथ्य, वस्तुएँ व घटनाएँ, स्थितियाँ तथा दिशाएँ सम्मिलित होती हैं। कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं उसके पारिवारिक सम्बन्ध, एक छात्र का दूसरे छात्र से भिन्न होता है। प्रत्येक छात्र अपनी योग्यता व क्षमता के अनुसार ही कक्षा में प्रत्यक्षीकरण करता है। छात्र का कक्षा में समायोजित होना उसके विकास के लिए आवश्यक है तथा छात्र द्वारा होने वाला यह समायोजन उसके परिवार, समाज, स्वास्थ्य एवं विद्यालय सभी से होना चाहिए। यदि बालक अपने परिवार में पूर्ण रूप से समायोजित है अर्थात उसका पारिवारिक सम्बन्ध स्वस्थ्य है तो उसका कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण सकारात्मक होगा तथा उसकी शैक्षिक उपलब्धि धनात्मक होगी। यदि बालक अपने परिवार में समायोजित नहीं हो पाता है अर्थात उसका पारिवारिक सम्बन्ध स्वस्थ्य नहीं है उसमें तरह–तरह के कलह होते रहते हैं तो उसका कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण नकारात्मक होगा जिससे उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित होगी इसलिए छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण के लिए उसके पारिवारीजनों के साथ उसके पारिवारिक सम्बन्धों के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन करने की नितान्त आवश्यकता है।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा– पूर्व अध्ययनों से ज्ञात होता है कि शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं जैसा कि माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की कृषि विज्ञान में प्रदर्शन पर माता–पिता की शैक्षिक योग्यता, आर्थिक स्थिति, व्यवसाय और घर की अवस्थिति के साथ सम्बन्धित और महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया।

इगुनशोला, 2014 छात्रों की अंग्रेजी भाषा में उपलब्धि पर माता–पिता की आर्थिक स्थिति का सकारात्मक प्रभाव पाया गया।

ओग विमुडिया एम0आई0 और आयशा, एम0वी0 2013 माता–पिता जो अनपढ़ है वे अपने बच्चों की शैक्षिक गतिविधियों का पालन करने में असमर्थ है।

सिंह, अमरवीर एवं सिंह जयपाल 2014 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के घर के वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया।

कक्कड़, निधि 2016 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के घर के वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

ओमन, निम्मी मारिया 2015 11वीं कक्षा के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और घर के परिवेश में महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाया गया।

देशवाल, वाई0एस0, रेखारानी एवं अहलावत सविता 2014 छात्रों के घर के परिवेश की विभिन्न श्रेणियों और उनकी गणित में उपलब्धि में महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाया गया।

सिंह, परमिन्दर 2016 छात्रों के स्कूल से घर आने पर माता–पिता द्वारा उनके शैक्षिक कार्यों की देख–रेख न करने पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

ओवेता, एंथोनी ओ0 2014 छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन पर परिवार के आकार और प्रकार का महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया।

समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में सतना जनपद के शहरी क्षेत्र में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। माध्यमिक विद्यालयों का चयन उद्देश्यपरक विधि से किया गया है तत्पश्चात् उसमें अध्ययनरत् 100 छात्र एवं 100 छात्राओं अर्थात् कुल 200 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में डॉ0 श्रीमती जी0 पी0 सौरी और डॉ0 जगदीश चन्द्र सिन्हा की प्रमापीकृत मापिनी का प्रयोग किया गया।

व्याख्या–

सारिणी–1 माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

सारणी 1

प्रतिदर्श	प्रतिदर्श सं0	मध्यमान M	मानक विचलन σ	मध्यमानों का अन्तर D	मानक त्रुटि σ_D	क्रान्तिक अनुपात t	सार्थकता स्तर	सारिणी मान	निष्कर्ष
परिवारिक वातावरण छात्र	100	84.3	10.244	7.6	2.697	4.90	सार्थक	(0.05) = 2.01 (0.01) = 2.68	अस्वीकृत
परिवारिक	100	76.7	8.8						

वातावरण छात्राएं									

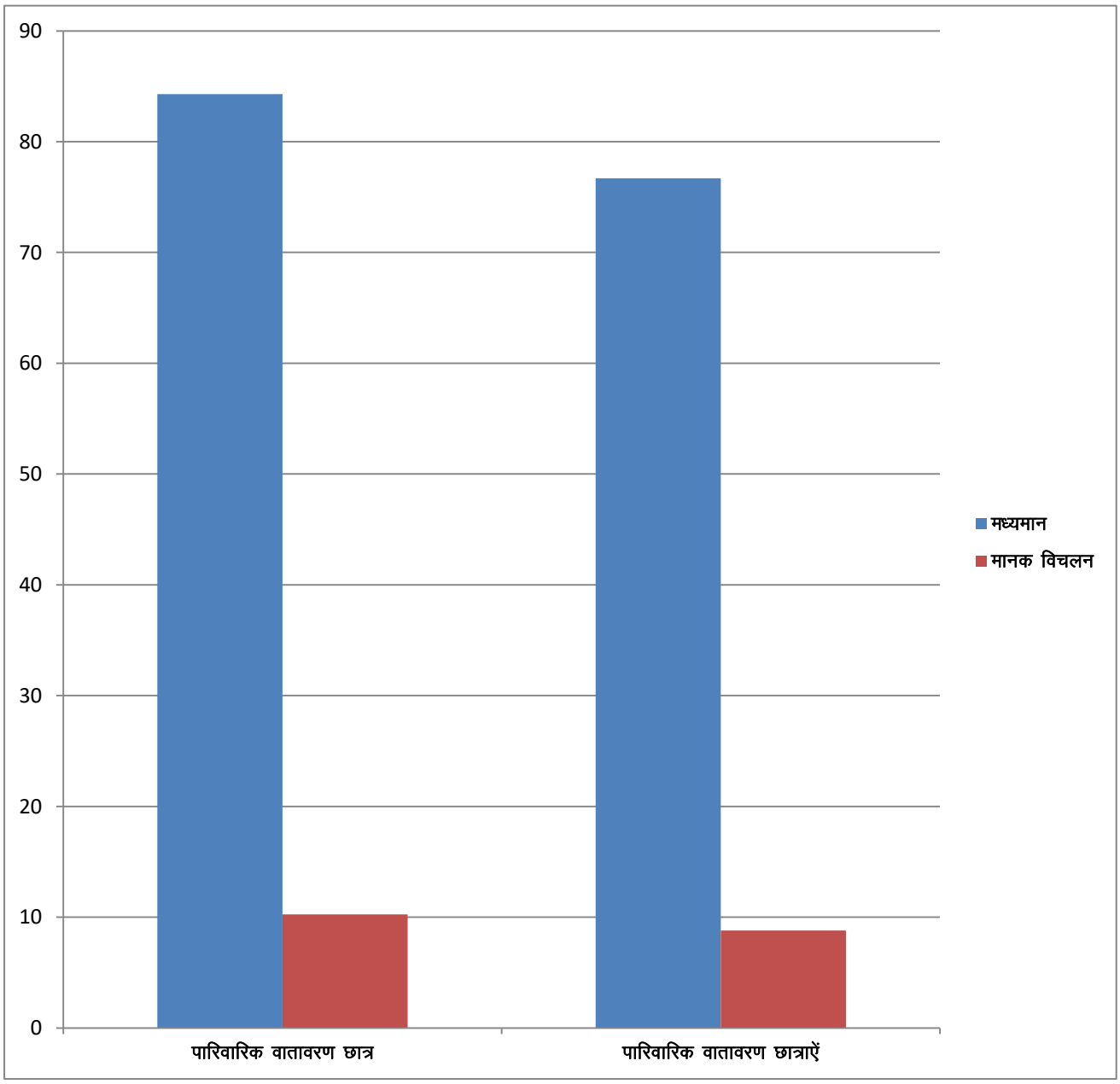

सारिणी (1) के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अंकों का मध्यमान 84.3 व 76.7 है तथा मानक विचलन 10.244 व 8.8 है। मध्यमानों का

अन्तर 7.6 तथा क्रान्तिक अनुपात (C.R.)का मान 4.90 है जो सार्थकता स्तर 0.05 के सारिणी मान 2. 01 से ज्यादा है अर्थात शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अर्थात माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के परिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर होगा। अतः माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के परिवारिक वातावरण में असमानता है।

सारिणी–2 उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 2

प्रतिदर्श	प्रतिदर्श सं0	मध्यमान M	मानक विचलन σ	मध्यमानों का अन्तर D	मानक त्रुटि σ_D	क्रान्तिक अनुपात t	सार्थकता स्तर	सारिणी मान	निष्कर्ष
उच्च पारिवारिक वातावरण के छात्र एवं छात्राएं	200	79.7	10.78	114.4	1.54	74.24	असार्थक	(0.05)= 2.01 (0.01)= 2.68	अस्वीकृत
निम्न पारिवारिक वातावरण के छात्र एवं छात्राए	200	194.1	1.54						

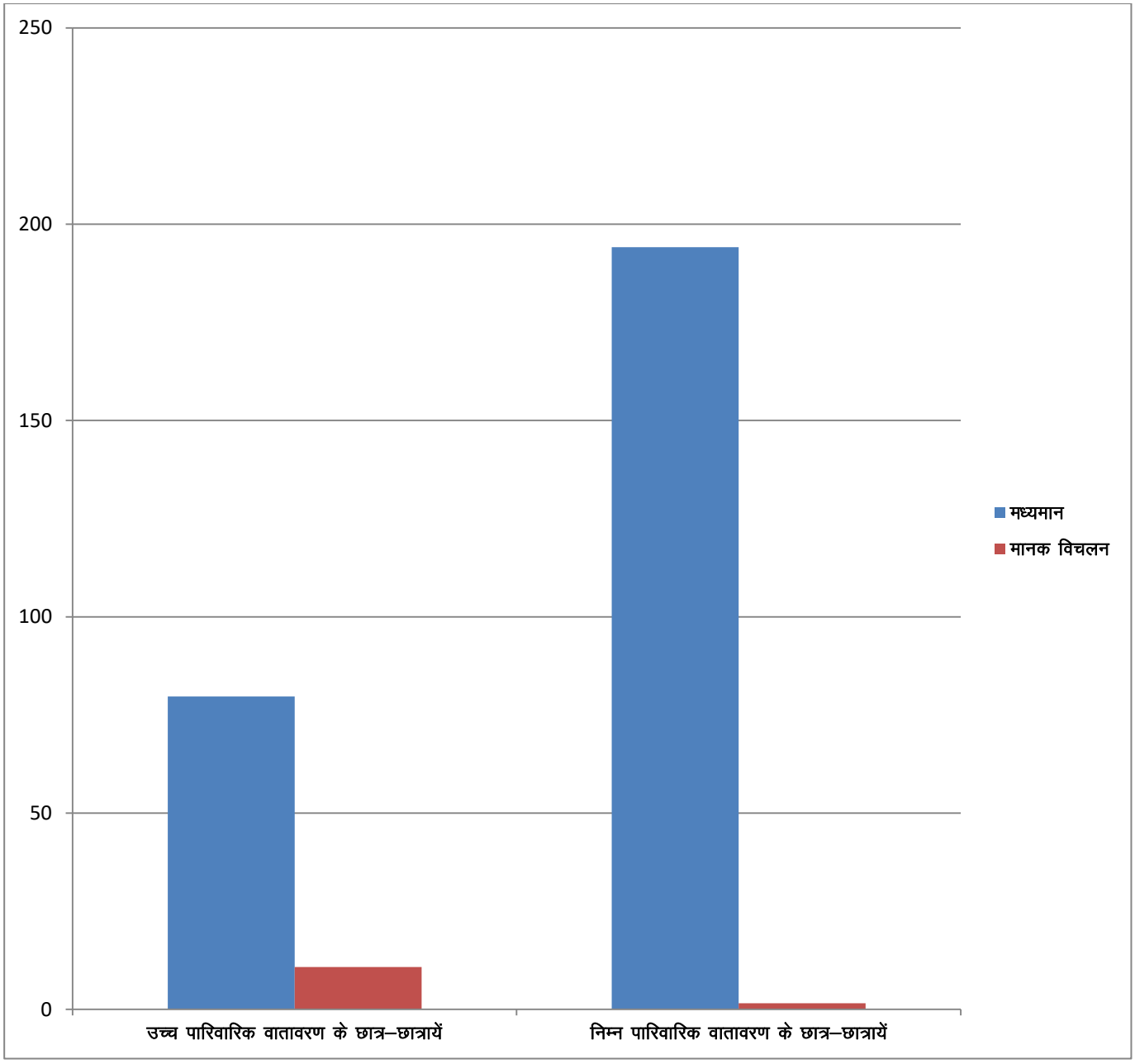

सारिणी (2) के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्र व छात्राओं के अंकों का मध्यमान 79.7 व 194.1 है तथा मानक विचलन 10.78 व 1.54 है। मध्यमानों का अन्तर 114.4 तथा क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का मान 74.24 है जो सार्थकता स्तर 0.05 के सारिणी मान 2.01 से ज्यादा है अर्थात शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अर्थात माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्र व छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का इनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव में सार्थक अंतर होगा। अतः माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्र व छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का इनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव में अन्तर है।

निष्कर्ष एवं सुझाव–

1. पारिवारिक वातावरण मापनी के आयामों की स्वतंत्रता विरूद्ध नियंत्रण, ध्यान देना विरूद्ध, पक्षपात, खुला संचार विरूद्ध नियंत्रण उत्साह विरूद्ध उदासीनता विमा के सार्थक अंतर नहीं पाया गया अतः यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया जा सकता है कि जिन विद्यार्थियों की विमाओं में सार्थक अंतर पाया गया है वह उनकी उपलब्धि को प्रभावित करती है। अध्ययन ने प्रदर्शित किया कि समाान्यतः उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के माता पिता निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के माता–पिता की अपेक्षा अपने बच्चों के प्रति और अधिक विनम्र अधिक विश्वास व्यवहार में अधिक उत्साही और अधिक आशावादी थे।
2. पारिवारिक वातावरण मापनी के आयामों में प्रधानता विरूद्ध आज्ञानुकूलता, स्वीकृति विरूद्ध अस्वीकृति, विश्वास विरूद्ध अविश्वास, प्यार विरूद्ध त्याग, अपेक्षा विरूद्ध उपेक्षा, उत्साह विरूद्ध उदासीनता, न्याय विरूद्ध पक्षपात विमा में सार्थक अंतर पाया गया अतः यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया जा सकता है कि जिन विमाओं में सार्थक अंतर पाया गया है। वह छात्रों की उपलब्धि को प्रभावित करती हैं। अध्ययन ने प्रदर्शित किया कि सामान्यतः उच्च उपलब्धि वाले छात्राओं के माता–पिता निम्न उपलब्धि वाले छात्रों के माता–पिता की अपेक्षा अपने बच्चों से अपने सम्बन्ध और अधिक विनम्र अधिक उत्साही और अधिक औचित्यपूर्ण थे।
3. पारिवारिक वातावरण मापनी के आयामों की स्वतंत्र विरूद्ध नियंत्रण, प्रधानता विरूद्ध आज्ञानुकूलता, स्वीकृति विरूद्ध अस्वीकृति, विश्वास विरूद्ध त्याग, अपेक्षा विरूद्ध उपेक्षा, उत्साह विरूद्ध अपेक्षा, उत्साह विरूद्ध उदासीनता, न्याय विरूद्ध पक्षपात, विमा में सार्थक अंतर पाया गया है। वह छात्राओं की उपलब्धि को प्रभावित करती है। अध्ययन से प्रदर्शित किया जा सकता है कि सामान्यतः उच्च उपलब्धि वाली छात्राओं के माता पिता उनकी ओर अधिक ध्यान और सम्बन्धों के प्रति उत्साहीपन दिखाने और उनसे अधिक वास्तविक अपेक्षा चाह रखते हैं।
4. अध्ययन के निष्कर्ष से पारिवारिक वातावरण तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध का भी ज्ञान हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. माथुर, एस.एस. (2010) उभरते भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2, पृ0 सं0 04–05
2. ओड, एल.के., (2012), शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी अकादमी, जयपुर, पृ0 सं0 – 203
3. सक्सेना, एन.आर., चतुर्वेदी, शिखा, स्वरूप, (2012), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ पृ0 सं0 – 03, 09, 10
4. अग्रवाल, जे.सी., शैक्षिक तकनीकी प्रबन्ध एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2005 पृ0सं0– 335
5. सोनी, रामगोपाल (2014), उदयोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट, आगरा, पृ0 सं0 416
6. सिंह, गया (2012), अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ0सं0 62
7. त्यागी, डॉ. गुरसरनदास एवं नंद, डॉ. विजय कुमार (2009), उदीयमान भारत में शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ0सं0 83
8. दुबे, प्रो. एल. एन. एवं बरोदे, प्रो. बी. आर. (2009), शिक्षा मनोविज्ञान, आरोही प्रकाशन, साउथ सिविल लाइन्स, जबलपुर, प्रथम संस्करण, पृ0सं0 81
9. शमीम आरा हुसैन, माता–पिता का संतान से सम्बन्ध तथा उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन, एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी, वॉल्यूम, (2013), पृ० 338–341।
10. प्लेटो दा रिपब्लिक, जोवेट, हार्वड युनिवर्सिटी प्रेस, लंदन (1807), पृ० 416